|| NAMO TITTHASSA ||

GACCHADHIPATI (SPIRITUAL SOVEREIGN)
JAINACHARYA SHRIMADVIJAY
YUGBHUSHANSURI
(PANDIT MAHARAJ SAHEB)

[मूल गुजराती पत्र का अनुवाद]

विक्रम संवत २०७७, अश्विन शुक्ल ८, दिनांक: १३ अक्टूबर २०२१, बोरीवली (पश्चिम), मुम्बई

Ref No. : 202110G-34

सकल श्रीसंघ की जानकारी हेतु स्पष्टीकरण

श्री शत्रुंजय महातीर्थ संबंधित नीलकंठ महादेव केस का फैसला लगभग पौने दो महीने पहले आया है, जो सोशल और प्रिंट मीडिया में बधाई के साथ प्रसारित किया गया है । उसके विचारणीय मुद्दों पर आवश्यक तटस्थ विश्लेषण मैंने जारी किया है । कुछ परिबलों द्वारा इसकी विचित्र कही जा सकने वाली प्रतिक्रियाएँ सोशल मीडिया और अन्य माध्यमों से प्रचारित की गई है । शासनहित में उनका स्पष्टीकरण करना ज़रूरी लगता है ।

- उपरोक्त केस के एफिडेविट आदि में जिस प्रकार के स्फोटक मुद्दें हैं उनसे भी ज्यादा हानिकारक मुद्दें तीर्थों के अन्य दस्तावेज़ों में पेढ़ी द्वारा दर्ज किए गए हैं । वर्षों से इस विषय की विस्तृत जानकारी होने के बावजूद मैं मौन ही रहा हूँ । लेकिन उपरोक्त फैसले को पेढ़ी के पक्ष में अत्यंत लाभदायक और ऐतिहासिक कार्य के तौर पर घोषित किया गया । इसलिए उसकी सार्वजनिक समीक्षा करनी पडी ।
- पिछले 25 वर्षों में तीर्थों की अनेक गंभीर समस्याओं के बारे में पेढ़ी का ध्यान आकर्षित करते हुए मैंने आवश्यक कदम लेने के सुझाव दिए हैं । लेकिन दुर्भाग्यवश घोर उपेक्षा के कारण वे नुकसान अटके नहीं है । अरे ! पेढ़ी की ओर से लगभग प्रतिक्रिया भी नहीं मिली । पू. गच्छाधिपतिओं या आचार्य भगवंतों को भी शासन की समस्याओं से अवगत कराने में अपवाद को छोड लगभग यही हालत रही है । उपरोक्त फैसले से शासन को ही नुकसान होने के बावजूद, सार्वजनिक रूप से तीन ज्ञापन जारी किए जाने पर भी अब तक अधिकृत स्थानों से प्रतिक्रिया तक नहीं मिली हैं – यह हकीकत भी इसी बात का प्रमाण है । ऐसी परिस्थितियों में मौन रहने से शासन को लाभ होगा – ऐसा कोई समझदार व्यक्ति कह पाएगा ? मूकदर्शक बने रहने से पैदा होने वाले नुकसान और नए नुकसानों से कोई भी शासनप्रेमी सहमत हो – ऐसा मैं नहीं मानता ।
- जैनों को चाहिए कि वे अमीरों की खुशामत में से बाहर आकर त्यागी-संयमी महात्माओं को अधिक समझे – शासनसेवा के लिए यह अत्यंत ज़रूरी है । श्रेष्ठियों का मान न संभाला जाएँ तो शासन को नुकसान होगा, लेकिन इसके नाम पर धर्माचार्यों का मान न संभाला जाएँ तो कोई परवाह नहीं – ऐसा आश्चर्यकारी न्याय शासन के लिए हानिकारक नहीं है – ऐसा कहा जा सकता है भला ?
- धर्माचार्य के तौर पर भगवान द्वारा सौंपी गई श्रीसंघ को सही मार्गदर्शन देने की ज़िम्मेदारी निभाने के लिए भूलों की गंभीरता–हानिकारकता बतानी आवश्यक है । इसलिए जो पेढ़ी के पक्षकार है, वे तीर्थ के लिए हानिकारक भूलें सुधारने हेतु पेढ़ी पर दबाव लाकर जल्द ही कानूनी कदम उठवाएँ – इस आशय से सार्वजनिक रूप में कहा है । सिर्फ मौन रहने से या पेढ़ी को कह देने से नतीजा आ जाएगा ? दीर्घदृष्टि को पहचानने के लिए भी दीर्घदृष्टि चाहिए !!

बाकी इतनी समझदारी तो अपनी होनी चाहिए कि उपरोक्त ज्ञापनों में किया गया प्राथमिक विश्लेषण भी स्वयं न कर सकें ऐसे अबूझ लोग ही प्रतिपक्ष में है – ऐसा मान लेने की भूल हम नहीं कर सकते ।

अंत में, जिनमें ज़रा सी भी शासनचिंता हो, पेढ़ी के वे सभी तरफदार पेढ़ी पर दबाव लाकर उपरोक्त भूलें सुधरवाकर तीर्थसेवा का दुर्लभतम अवसर झड़प ले – यही सिफारिश करता हूँ ।

हस्ताक्षर

[गच्छाधिपति आचार्य विजय युगभूषणसूरि]